B.A. Part- I Hindi Hons.

शरणदाता शीर्षक कहानी का सारांश —

प्राध्यापक- डॉ० सतीश चन्द्र पाठक

[illegible] कॉलेज, जहानाबाद

देविन्दरलाल इस कहानी का केन्द्रीय पात्र है जिसके चारों ओर यह कहानी घूमती है। लाहौर उसका जन्म स्थल है अतः उस शहर से उसके जीवन के तार बहुत ही मजबूती के साथ जुड़े हुए हैं। साम्प्रदायिकता के गहराते क्षणों में भी उन्हें उम्मीद है कि यह स्थिति अन्ततः सामान्य हो जाएगी और उन्हें अपना शहर नहीं छोड़ना पड़ेगा। किन्तु धीरे-धीरे स्थितियाँ गंभीर होती जाती हैं। रफ़ीकुद्दीन के कहने पर वह शहर छोड़ने की संभावनाओं के पक्ष में बातें करता है। रफ़ीक उनके विचार के विपरीत उसे लाहौर में ही रहने की सलाह देता है साथ ही सुरक्षा का आश्वासन भी देता है। देविन्दरलाल तो यही चाहते ही थे अतः वे वहीं रुक जाते हैं। किन्तु स्थिति गंभीर होने पर वे अपना घर छोड़कर रफ़ीक के घर चले जाते हैं। किन्तु वहाँ भी वे सुरक्षित नहीं थे अतः रफ़ीक उन्हें अपने मित्र के घर में रखवा देते हैं। उस एकान्त में रहकर वे शहर की स्थितियों का आकलन करते हैं। वे जिन शेख साहब के घर में रह रहे हैं वहाँ केवल घर वालों की बातचीत की अस्पष्ट आवाजें ही सुन पाते हैं। किसी को देख नहीं पाते। समय बहुत मुश्किल से कट पाता है। उनके लिए शेख साहब के घर से खाना आता है जिसे वह बिलार को भी खिलाते हैं और उससे दोस्ती

जान बचायी।

शरणदाता शीर्षक कहानी मानवीय संवेदना को झकझोर देनेवाली कहानी है। इस कहानी में नेतृत्ववाले दो ही पात्र हैं – देविन्दरलाल एवं रफ़ीकुद्दीन किन्तु एक तीसरा पात्र भी है जो कभी सामने नहीं आया किन्तु अपनी महत्वपूर्ण भूमिका से कथानायक का जीवन नाटकीय सुरक्षित कर देती है एवं मानवीय संवेदना को जगाकर एक मिसाल भी प्रस्तुत कर देता है और वह तीसरा पात्र है जैबुन्निसा।

स्थापित कर लेते हैं। रात में चारों ओर से अल्लाहो अकबर की आवाजें सुनाई पड़ती है। घरों को जलने से उठने वाले धुआं का गुबार दिखलाई पड़ता है। ऐसे वातावरण में अगले दिन उनके खाने की रोटियों के बीच एक कागज के टुकड़े पर जहर की चेतावनी लिखी मिलती है वह सारा खाना बिलार को खिला देता है और क्रमतः बिलार मर जाता है ऐसे में वहाँ रहना निरापद नहीं था। उसी रात वह वहाँ से भाग खड़ा होता है और भागते-भागते अमृतसर पहुँच जाता है देविन्दरलाल एक सरल और आस्थावान व्यक्ति है उसके भीतर प्रबल जीजिविषा है। वह जितनी सरलता से रफीकुद्दीन पर विश्वास कर लेता है उतनी ही आसानी से शेख साहब पर भी वह मूल रूप से एक मनुष्य है। सामान्य मानव की समस्त विशेषताएं उसके चरित्र में घुली हुयी हैं। साम्प्रदायिक घृणा के बीच भी वह अविचलित है। वह यह कल्पना भी नहीं कर सकता कि साम्प्रदायिक घृणा की चरम परिणति हिन्दुओं की हत्या और लूट में परिवर्तित हो जायगी।

रफीकुद्दीन इस कहानी का दूसरा प्रधान पात्र है वह एक आदर्शवादी पात्र है। कहानी के आरंभ में वह मानवीय मूल्यों के लिए समर्पित दिखलाई पड़ता है, किंतु धीरे-धीरे सामाजिक दबाव के समक्ष वह घुटने टेक देता है। वह कथानायक देविन्दरलाल का मित्र है वह बहुसंख्यक समुदाय का एक सम्मानीत सदस्य है समाज में न केवल इसकी प्रतिष्ठा है वरन वह समय-समय पर समाज का मार्गदर्शन भी करता है। लाहौर में जब साम्प्रदायिकता की लहर में सारा शहर दग्ध होने